Bodhi-Path Year 2023 July Issue Volume 25 Page No 18-22

बौद्ध धर्म के उत्थान और विस्तार में थेरवाद और महायान सम्प्रदाय की भूमिका

धीरज कु. निर्भय
शोधार्थी, बौद्ध - अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
Email. dhiraj.nirbhay84@gmail.com

विषय - प्रवेश

भारतवर्ष का बाह्य रुप अतिशय अभिराम है। इसका अभ्यंतर रूप इससे भी अधिक सुचारु और सुन्दर है। यहां सभ्यता और संस्कृति का उदय हुआ। धर्म और दर्शन का जन्म हुआ। संस्कृति रूपी ज्ञान - मानसरोवर से अनेक विचारधाराएं निकली जो भारत को हीं नहीं, प्रत्युत् संसार के अनेक देशों को, किसी न किसी रूप में आज भी आप्यायित कर रही हैं। भारतवर्ष मुख्य रूप से चार प्रमुख धर्मों की जन्मभूमि है - बुद्ध धर्म, जैन धर्म, हिन्दू धर्म और सिक्ख धर्म।

"अत्तदीपा: भवथ अत्तशरणा:" अर्थात् तुमलोग स्वयं ही दीपक बनो तथा दूसरे की शरण में न जाकर अपनी ही शरण में जावो !
इसका भाव यह है कि अपने अन्त:करण से जो प्रकाश मिलता है उसी के द्वारा धर्म के रहस्यों को समझो तथा गुरु अथवा धर्मोपदेशक के शरण में न आकर स्वयं ही अपना पथ प्रदर्शन करो। जहां अन्य धर्मवालों ने गुरु को ईश्वर से भी बड़ा बतला कर उसके शरण में जाना शिष्य का परम कर्तव्य निश्चित किया है, वहां भगवान बुद्ध ने गुरु की सत्ता को सीमित कर शिष्य की महत्ता का प्रतिपादन किया है। .... आचार्य बलदेव उपाध्याय (बौद्ध दर्शन मीमांसा)

बौद्ध धर्म विश्व के महनीय धर्मो में अन्यतम है। भगवान बुद्ध इसी भारत भूमि में अवतीर्ण हुए थे। वे संसार की दिव्य विभूति थे। महामहिमशाली गुणों से वे विभूषित थे। उन्होंने समय की परिस्थिति के अनुरूप जिस धर्म का चक्र - प्रवर्तन किया, वह इतना सजीव, इतना व्यवहारिक तथा इतना मंगलमय था कि आज ढाई हजार वर्षो के अनंतर भी उसका प्रभाव मानव समाज पर न्यून नहीं हुआ है। एशिया के केवल एक छोटे पश्चिमी भाग को छोड़कर इस विस्तृत भूखण्ड पर इसकी प्रभुता अतुलनीय है। बुद्ध धर्म ने करोड़ों प्राणियों का मंगल साधन किया है और आज भी वह उनके आत्यंतिक कल्याण की साधना में लगा हुआ है। पाश्चात्य जगत के चिन्तन शील व्यक्तियों पर इस धर्म तथा दर्शन का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पूर्वकाल में पड़ा है और आज भी पड़ रहा है।
भगवान बुद्ध ने सम्यक संबोधि - परम उत्कृष्ठ ज्ञान प्राप्त कर लेने पर जिन चार उत्तम सत्यों (आर्य सत्यों) को खोज निकाला, उनमें पहला सत्य है दु:ख! यह जगत दु:खमय है। इस सिद्धान्त को देखकर आधुनिक विद्वानों की यह धारणा बन गई है कि बौद्धधर्म नैराश्यवादी है, परन्तु यह धारणा नितान्त भ्रांत है। यदि दु:ख तत्व तक ही यह व्याख्या समाप्त हो जाती, तो नैराश्यवादी होने का कलंक इस पर लगाया जाता। परंतु भगवान बुद्ध ने दु:ख के समुदय (कारण तथा दु:ख के निरोध - निर्वाण) को बतलाकर दु:ख निरोध के मार्ग का स्पष्ट प्रतिपादन किया। अत: अन्य भारतीय दर्शन - सम्प्रदायों की भाँति इस जगत् के दु:खों से अत्यन्त विराम पाना ही बौद्ध धर्म का भी लक्ष्य है। मनुष्य की स्वतन्त्रता, स्वावलंबन तथा महत्ता का प्रतिपादन बौद्धधर्म की महती विशेषता है। जगत में 'सत्ता' नहीं है, ' परिणाम ' ही केवल सत्य है। बुद्धदर्शन का यही मुख्य सिद्धान्त है। ग्रीक दार्शनिक हीरेक्लिट्स ने भी ' परिवर्तन ' के तथ्य को माना है, परन्तु बुद्ध का यह मत इस ग्रीक तत्ववेत्ता से कहीं अधिक प्राचीन है।

सब वस्तुयें आत्मा (स्वभाव) से रहित हैं। पुद्गल - नैरात्म्य तथा धर्म - नैरात्म्य के सम्मिलन से समस्त संसार आत्म - शून्य प्रतीत होता है। इस सिद्धान्त की मीमांसा थेरवाद तथा महायान में बड़ी युक्तियों से की गई है।
काम तथा तृष्णा से जगत् का उदय होता है। तृष्णा आदि क्लेशों का मूल अविद्या है। शील, समाधि, प्रज्ञा - ये बुद्धदर्शन के तीन रत्न हैं। इसी प्रकार जैन धर्म में सम्यक - दर्शन, सम्यक - ज्ञान और सम्यक - चरित्र को रत्नत्रय कहा जाता है।
इन्हीं मूल सिद्धांतों की व्याख्या को लेकर नाना बौद्ध - सम्प्रदायों का उदय हुआ। बुद्धधर्म के दो प्रधान विभाग हैं - थेरवाद/स्थविरवाद/हीनयान और महायान। बुद्धधर्म का प्रारम्भिक रूप थेरवाद है और अवान्तर विकसित रूप महायान है। भगवान बुद्ध के व्यक्तित्व का परिचय पा लेने से उनके धर्म के मूलरूप को सरलता से समझा जा सकता है।

भगवान बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के शाक्य कुल में राजा शुद्धोधन की पत्नी रानी महामाया के गर्भ से हुआ था, उनका जनस्थल लुंबिनी वर्तमान नेपाल में अवस्थित है। 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल का त्याग कर महा अभिनिष्क्रमण किया! लगभग 36 वर्ष की आयु में उन्हें बोधगया बिहार में बोधिवृक्ष (पीपल वृक्ष) के नीचे ऋजुपालिका नदी के तट पर सम्बोधि की प्राप्ति हुई। इसके उपरान्त ऋषिपत्तन, सारनाथ में धम्मचकपवत्तन कर पञ्चवर्गीय भिख्खुओं के साथ बुद्ध संघ की स्थापना की ! 5 वर्ष उपरान्त वैशाली के महावन विहार में भिख्खुनी संघ की स्थापना हुई। 80 वर्ष की अवस्था में कुशीग्राम वर्तमान कसिया उत्तर प्रदेश में 583 ईसा पूर्व में महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

भगवान बुद्ध ने अपने कार्य को स्थायी बनाने के लिए ' संघ ' की स्थापना की थी! इसकी रचना राजनीतिक संघ (गणतन्त्र की सभा) के अनुसार की गई थी। बुद्ध भी प्रजातंत्र के पक्षपाती थे। फलत: उन्होंने अपने संघ को भी प्रजातंत्र की शैली पर ही निर्मित किया। भिक्खुओं के पालन करने के निमित्त अनेक नियम थे और इन्हीं का संकलन ' विनयपिटक ' में किया गया है। बुद्धधर्म के तीन रत्न हैं - बुद्ध, धर्म और संघ। इन्हीं तीनों का शरणापन्न व्यक्ति बौद्ध माना जाता है। संघ का परिपालन बड़े नियम के साथ किया जाता था। अपराधी भिख्खु को दण्ड देने का काम संघ हीं करता था। संघ की इस सुव्यवस्था के कारण ही बौद्ध धर्म की स्थायिता बहुत दिनों तक बनी रही।

परिचर्चा

बौद्धधर्म की शाखाएँ

बौद्ध धर्म की दो प्रधान शाखाएँ हैं - १. हीनयान/थेरवाद २. महायान !
इन नामों का निर्देश महायानियों ने किया। अपने आप को तो उन्होंने श्रेष्ठ बतलाकर अपने मार्ग को ' महान् ' मान लिया और प्राचीन मतावलंबियों को हीनयान के नाम से अभिहित किया। वैशाली की संगीति में महास्थविरों ने स्वातंत्र्यप्रिय महासांघिकों को अधर्मवादी, पाप भिक्षु कहकर अपमानित किया था।
'हीनयान' से अभिप्राय पाली त्रिपिटकों के आधार पर व्यवस्थित धर्म से है जिसका प्रचार आजकल लंका, स्याम, बर्मा आदि भारत से दक्षिणी देशों में है। ये लोग अपने को ' थेरवादी ' (स्थविरवादी) कहते हैं और यही नाम प्राचीन भी है। महायानियों का प्रभुत्व चीन, जापान, मंगोलिया, कोरिया आदि भारत से उत्तर के देशों में है। इन दोनों मतों के सैद्धांतिक विभेद को हम यहां समझने का प्रयास करेंगे। ' महायान ' का उदय कब हुआ? इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता है। कतिपय विद्वान् अश्वघोष को महायान के सिद्धांतों के प्रवर्तन का श्रेय प्रदान करते हैं। चीनी भाषा में अश्वघोष की 'महायान - श्रद्धोत्पाद शास्त्र' नामक रचना आज भी विद्यमान है। तिब्बती परम्परा

में अश्वघोष सर्वत्र ' सर्वास्तिवादी' माने गए हैं अर्थात् वे स्वयं हीनायानी थे। नागार्जुन को हम महायानी दार्शनिकों में आदिम मान सकते हैं, परन्तु उनसे भी पहले महायान के समर्थक सूत्रग्रन्थ उपलब्ध थे।

महायान की ही विकसित शाखाएं मंत्रयान तथा वज्रयान हैं। इनमें मंत्र तथा तन्त्र का साम्राज्य है। इसका विशेष प्रचार बंगाल, उड़ीसा तथा आसाम के प्रान्तों में हुआ। इन्हीं का प्रचार तिब्बत में हुआ। इस प्रकार बौद्ध धर्म के यानों का समय निर्देश इस प्रकार मोटे तौर से किया जा सकता है -
१. हीनयान - ईसा पूर्व 500 से 200 ईस्वी
२. महायान - 200 ईस्वी से 800 ईस्वी
३. वज्रयान - 800 ईस्वी से 1200 ईस्वी

महायान सम्प्रदाय का अपना विशिष्ट त्रिपिटक नहीं है और यह हो भी नहीं सकता, क्योंकि महायान किसी एक सम्प्रदाय का नाम नहीं है। इसके अन्तर्गत अनेक सम्प्रदाय हैं जिनके दार्शनिक सिद्धान्तों में अनेकत: पार्थक्य है। ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ में बोधिसत्त्वपिटक का उल्लेख किया है और महायान के अनुसार विनयपिटक और अभिधम्मपिटक का भी निर्देश है। परन्तु यह कल्पित नाम प्रतीत होता है। यह किसी एक विशेष त्रिपिटक का नाम नहीं। नेपाल में नव ग्रन्थ विशेष आदर तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाते हैं। इन्हें नवधर्म के नाम से पुकारते हैं। यहां धर्म का अभिप्राय धर्मप्रयाय (धार्मिक ग्रन्थों) से है। इन ग्रन्थों के नाम हैं - (१) अष्ट - साहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता (२) सद्धर्म - पुंडरीक (३) ललितविस्त (४) लंकावतार सूत्र (५) सुवर्णप्रभास (६) गंड़व्यूह सूत्र (७) तथागत गुह्यक अथवा तथागत गुणज्ञान (८) समाधिराज (९) दशभूमिक अथवा दशभूमेश्वर। इन्हें 'वैपुल्यसूत्र' कहते हैं, जो महायान सूत्रों की सामान्य संज्ञा है। ये ग्रन्थ एक सम्प्रदाय के नहीं हैं और न एक समय की ही रचनाएं हैं। सामान्य रूप से इनमें महायान के सिद्धान्तों का प्रतिपादन है।

बौद्ध धर्म की महायान शाखा की परिणति वज्रयान, मंत्रयान, कालचक्रयान, सहजयान, तंत्रयान आदि के रूप में हुई। वज्रयान का प्रमुख तत्त्व शून्यवाद है जिसको वज्रयानी शून्य, विज्ञान, और महासुख तीन तत्त्वों से युक्त मानते हैं। वज्र 'शून्यता' का भौतिक प्रतीक है, वज्रयान का अर्थ है सब बुद्धों का ज्ञान। सर्ववाद की भावना से युक्त वज्रयान के प्रधान देव वज्रधर हैं जिनमें पाँच ध्यानी बुद्ध अमिताभ, अक्षोभ्य, रत्नसंभव, वैरोचन और अमोघसिद्धि उत्पन्न हुए माने जाते हैं। - रामसिंह तोमर (प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य पृष्ठ 172)

महायान सूत्रों के अनुसार परिनिर्वाण के अनंतर चार शताब्दियाँ बीतने पर नागार्जुन के द्वारा महायान का प्रकाश मानना चाहिए। नागार्जुन के अनुसार बुद्ध देशना द्विविध है - गुह्य एवम् व्यक्त। पहली बोधिसत्वों के लिए दी गई थी, दूसरी अर्हत्विषयक थी । यही भेद महायान और हीनयान के रूप में प्रकट होता है। हीनयान के सूत्रों में जिस धर्मतथता का संकेतमात्र है, प्रज्ञापारमिता में उसका विस्तृत विवरण है। श्रावकयान में केवल पुद्गलशून्यता का उपदेश है, बुद्धयान में धर्मशून्यता का भी। बुद्धयान सर्वार्थ है, श्रावकयान केवल स्वार्थ। महायान महाकरुणा से प्रेरित है एवम् सब के निर्वाण को अपना लक्ष्य मानता है। हीनयान में दुःख अनित्य एवम् अनात्म के लक्षणों का महत्त्व है, महायान में शून्यता का । - डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय (बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास पृष्ठ 304)

जो मनुष्य बुद्धत्व प्राप्ति के लिए पारमिताओं का अभ्यास करता है वह बोधिसत्व कहलाता है। पारमिताओं की अभ्यासी अवस्था हीं बोधिसत्व है और पूर्णता हीं बुद्धता है। अभ्यासावस्था में बोधिसत्व प्राणियों का हित करता है और हित करने के लिए बारम्बार जन्म धारण करता है। बोधिसत्व पूर्णतया बुद्ध मार्ग पर चलनेवाले हैं और कदाचित् इसलिए इस मार्ग को बड़ा मार्ग या महायान कहा गया है। अर्हत् जिस मार्ग पर चलते हैं वह भी बुद्ध का कहा हुआ है पर उसमें पूर्णता नहीं है प्रत्युत केवल अपनी मुक्ति का ख्याल होने से वह छोटे मनवालों की बात जान पड़ती है। इस छोटेपन के कारण उसे छोटा मार्ग या हीनयान कहा जाता है।
श्रावक (अर्हत्) यान, प्रत्येकबुद्धयान दोनों हीनयान हैं, पहला अपनी मुक्ति के लिए बुद्ध के रास्ते पर चलता है, दूसरा अपने आप रास्ता निकलकर मुक्त होता है। - भदंत शान्तिभिक्षु, (महायान पृष्ठ 15)

' भगवा अर्हम् सम्मा संबुद्ध विज्जाचरणसंपन्नो सुगतो लोकविद् अनुत्तरो पुरिषधम्मसारथी सत्ता देवमनुस्सानम् सत्था बुद्धो भगवा' । (दीघनिकाय भाग १ निकाय की स्थविरवादी कल्पना)

अर्थात् भगवान अर्हत् सम्यक् ज्ञान सम्पन्न, विद्या और आचरण से युक्त, सद्गति को प्राप्त करने वाले लोकज्ञाता, श्रेष्ठ, मनुष्यों के नायक, देवता और मनुष्यों के उपदेशक ज्ञानसम्पन्न तथा भगवान थे।

महायान और हीनयान के पारस्परिक भेद मुख्य रूप में त्रिकाय सिद्धांत को लेकर हैं। हीनयान निकायों में स्थविरवादियोंने त्रिकाय के सम्बंध में विशेष कुछ नहीं लिखा है, क्योंकि उनकी दृष्टि में बुद्ध शरीर धारण करनेवाले एक साधारण मानव थे तथा साधारण मनुष्यों की भांति ही वे समस्त मानवीय दुर्बलताओं के भाजक थे। स्थविरवादियों ने कभी - कभी बुद्ध को धार्मिक नियमों का समुच्चय बतलाया, परन्तु यह केवल संकेत मात्र था जिसके गूढ़ तात्पर्य की ओर उन्होंने अपनी दृष्टि कभी भी नहीं डाली। महासंघिकों ने त्रिकाय के निर्माणकाय, संभोगकाय और धर्मकाय तीनों की आध्यात्मिक रीति से ठीक - ठीक विवेचना प्रस्तुत की। 'त्रिकाय' महायान - सम्प्रदाय का मुख्य सिद्धान्त समझा जाता है। निर्वाण के विषय में दोनों की कल्पनाएं परस्पर नितान्त भिन्न हैं।

बोधिसत्व की दस भूमियाँ - मुदिता, विमला, प्रभाकरी, अर्चिष्मति, सुदुर्जया, अभिमुक्ति, दुरंगमा, अचला, साधुमती, और धर्ममेघ।
बोधिसत्व की दस पारमिताएं - दान, शील, नैष्कर्म्य, प्रज्ञा, वीर्य, क्षांति, सत्य, अधिष्ठान, मैत्री तथा उपेक्षा।
माना जाता है कि इन्हीं पारमिताओं के द्वारा शाक्यमुनि ने 550 जन्म लेकर सम्यक् सम्बोधि की लोकोत्तर सम्पत्ति प्राप्त की ।

भगवान बुद्ध के समग्र उपदेशों का सारांश इस सुप्रसिद्ध पद्य में प्रकट किया गया है -

ये धम्मां हेतु - प्रभवा हेतुम् तेषाम् तथागतो ह्यवदत् ।
अवदच्च यो निरोधो एवम् वादी महाश्रमण: ।। वैभाषिक सिद्धान्त)

अर्थात् इस जगत् में जितने धर्म हैं वे हेतु से उत्पन्न होते हैं। उनके हेतु को तथागत ने बतलाया है। इन धर्मों का निरोध भी होता है। महाश्रमण ने इस निरोध का भी कथन किया है। इस प्रकार धर्म, हेतु तथा उनका निरोध - इन तीन शब्दों में हीं भगवान तथागत के महनीय धर्म का सार अंश उपस्थित किया जा सकता है। यह जगत् वस्तुत: सूक्ष्म (72 प्रकार के) धर्मों के संघात का ही परिणाम है। बलदेव उपाध्याय जी ने धर्मों को चार भागों में बांट कर बताया है - चंचलावस्था (दुःख), चंचलावस्था का कारण (समुदय), परम शान्ति की दशा (निरोध), शान्ति का उपाय(मार्ग) ।

निष्कर्ष

भारतीय बौद्ध धर्म ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 13 वीं शताब्दी तक सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप को अपने प्रकाश से दैदीप्यमान किया। इस बीच बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के छोटे भूभाग से निकल कर यह धर्म यूरोप और अफ्रीका तक अपनी कृति और ज्ञान से अबोध मानव जाति का कल्याण कर्ता बना। युद्व और हिंसा से त्रस्त मानव आज पुन: वैसा हीं कोई चमत्कार खोज रही है जिस प्रकार की असीम शान्ति और आनन्द का प्रवाह बौद्ध धर्म ने अपनी विजय - दुंदुभी बजाकर पूर्व में दिया था। नागसेन, बुद्धदत्त, बुद्धघोष, धम्मपाल, नागार्जुन, वसुबंधु, असंग, मैत्रेयनाथ, दिङ.नाग, धर्मकीर्ति आदि महान् दार्शनिकों ने बौद्ध दर्शन परम्परा को समृद्ध किया था।
लगभग 200 वर्षों तक यह भारत का राजकीय धर्म रहा और सम्राट अशोक, कनिष्क और हर्ष जैसे राजाओं के संरक्षण में विस्तार पाता गया। 4 बौद्ध संगीतियों, नालन्दा, विक्रमशील, जगद्दलपुरी, ओदंतपुरी, वल्लभी, तक्षशिला

जैसे महाविहारों के ज्ञान प्रकाश से जगमगाती भारतभूमि, जहां फाहियान, ह्वान त्सांग, इत्सिंग जैसे ज्ञान पिपासु चीनी बौद्ध भिक्षु ने आकर अपनी प्यास बुझाई। और इसी ज्ञान को ले जाकर अपने देश के करोड़ों लोगों का कल्याण किया। थेर महेन्द, थेरी संघमित्रा, आचार्य बोधिधर्मन, आचार्य शांतरक्षित, दीपंकर श्रीज्ञान, कुमारजीव, परमार्थ, वज्रबोधि आदि बौद्ध धर्म प्रचारकों ने भारत से बाहर निकल कर अन्य देशाें में बौद्ध धर्म को स्थापित किया था।

भगवान बुद्ध की असाधारण प्रतिभाशाली ज्ञान परम्परा भले हीं विभिन्न सम्प्रदायों में बंटती गई परन्तु ज्ञान मीमांसा की इन्होंने वृद्धि ही की । थेरवाद, महायान और तंत्रयान के सैकड़ों दार्शनिकों ने अपने ज्ञान की थाती से भारत का ज्ञान भण्डार अपने पड़ोसी राज्यों और देशों को बांट कर जगत का कल्याण किया। आज जब भारत अपने इसी ज्ञान भण्डार से वंचित था तब तिब्बत, चीन, नेपाल, श्रीलंका, बर्मा आदि देशों ने उसी धरोहर को वापस बांट कर भारतीय बौद्ध धर्म को नया जीवन दिया। आज सारी दुनिया पुन: भारत की ओर देख रही है ताकी विश्व शान्ति और मानवता के कल्याणार्थ भारत विश्व के मार्गदर्शन के लिए आगे आ सके। अप्रैल 2023 में भारत सरकार ने नई दिल्ली में 2 दिवसीय वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन आयोजित कर इसकी शुरूआत भी कर दी है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि "युद्व नहीं बुद्ध" अर्थात् भगवान बुद्ध के उपदेशों पर चलकर हीं विश्व का कल्याण हो सकता है। आधुनिक विश्व की ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान सैकड़ों वर्ष पहले भगवान बुद्ध के दिए उपदेशों में हमें प्राप्त न हुआ हो। "वसुधैव कुटुंबकम्" और प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की शिक्षाओं के उत्थान के साथ धारणीय विकास की अवधारणा को साथ लेकर संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार ने आज़ादी के अमृत महोत्सव काल में यह सम्मेलन आयोजित किया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

१. बौद्ध दर्शन मीमांसा : आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन वाराणसी 2017
२. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष : पुरुषोत्तम विश्वनाथ बापट, प्रकाशन विभाग भारत सरकार 2010
३. विनय पिटक : महापंडित राहुल सांकृत्यायन, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली 2022
४. बौद्ध संस्कृति : महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आधुनिक पुस्तक भवन कलकत्ता 1953
५. भगवान बुद्ध और उनका धम्म : बोधिसत्व बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली 2016
६. दर्शन दिग्दर्शन : राहुल सांकृत्यायन, किताब महल 2017
७. संस्कृत साहित्य का इतिहास : आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी 2001
८. पालि साहित्य का इतिहास : राहुल सांकृत्यायन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ 2011
९. भारत का इतिहास : डॉ. ए. के. मित्तल, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा 2006
१०. थेरगाथा : भिक्षु डॉ. धर्मरत्न, गौतम बुक सेन्टर दिल्ली 2013
११. प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म : प्रो. करमतेज सिंह सराओ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 2004
१२. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास - डॉ. गोविंदचंद्र पाण्डेय, हिन्दी समिति लखनऊ 1976
१३. प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य - रामसिंह तोमर, हिन्दी परिषद् प्रकाशन प्रयाग 1964
१४. हिंदुस्तानी (तिमाही पत्रिका) - पं. परशुराम चतुर्वेदी, संयुक्त प्रान्त इलाहाबाद, जनवरी 1939
१५. बौद्धधर्म दर्शन - आचार्य नरेन्द्र देव, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना 1970
१६. भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास - लामा तारानाथ, काशी प्र. जायसवाल शोध संस्थान पटना 1971
१७. महायान - भदन्त शांतिभिक्षु, विश्वभारती ग्रन्थालय कलकत्ता
१८. बौद्ध शिखर सम्मेलन आलेख : pmindia.gov.in, 20 अप्रैल 2023